













जायजिनपदवपुसुगन्धपुखानापदवपुशुहवति॥

28

॥ सहस्र उवाच ॥ ३

[illegible]







यस्मिन्मधुदधयपयत्रा॥ नाविमोदार्थिंमत्सकाममूयसंक्रान्तयामयाधमदनितां दृष्टुमस्यावस्वरुचनंगतो॥ ॥ कस्मादुहिरुक्कवशनिद्रिह्योयत्तिवत्तः

चक्रिकां शोभाय कार्त्तिके वारि क्रवः ४ मिद्रिक्तव्यं ममाक्षममनिर्दृश ॥ ॥ तन्नाशिरुवः संनयजाता रगवर्दयप्रद्वृहगव-काहल ४ क ४ पश्ययज्जसोसोव ४ ४

इमादिगान्धिकवस्तुनिषहितित्वद्वर्गनमयायसमूहमक्षकालगतवृत्ति॥ रगवानाह॥ शिद्धवः वृद्धवः रगपूर्ववृत्तिवोपादधिकमहो लिनायोऽकमस्ति॥ नयज

जि न वती नाम न दीया न नाति हू न नानाया दय दु माय (म) रि न म नो न म वि स्ता न न नि नू य वा हि न धर्म नू चि न म पि ४ य नि व ग ति स्सा स नि र्ध म् (ग) ४ ग रु त्ता

प्रमंगल वावाता न न जया प्रमया गु नूय ह्य मंरुत्वा ना ना विना द क था ला य न सुख न तिष्ठति ॥ न न ४ सम नि ध न् न्वा र्ध दं च्च ना ज्ञा न्वा वा ज्ञ ल भ न ना ज्ञा न्वा न्वा

सङ्गीतलक्षणगतत्वं जहं दध्या नमदध्या नाज नूली ता सि वा पुनः॥ अथ सना जा क लुपि च पछा मंकला हामान वंद हि गुना त्वरु य विषा दा त्र कि तु मा गे भ द धृ ज झारु य म

विष्णुः